आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सत्यमेव जयते

राजभाषा विशेषांक

वर्ष 2022-2023

पंजज्योति

अंक-6

उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
लुधियाना।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में आयोजित हिंदी कार्यशाला-2023

अनुक्रमणिका

क्र.सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	विषय सूची	1
2.	पत्रिका समिति एवं संपादक मंडल	2
3.	संदेश	3-5
4.	संरक्षक की कलम से	6
5.	संपादकीय	7
6.	इंडोर गार्डन-भविष्य का गार्डन	8-13
7.	हम तुम	14
8.	भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय	15-17
9.	इंसानियत और रूहानियत संग-संग	18
10.	'बचत'	19
11.	काश! जिंदगी सारस-सी होती	20
12.	राजस्थान-स्वादिष्ट व्यंजनों की भूमि	21
13.	खत	22
14.	लुधियाना अर्थात लोधी–आना	23
15.	रिपोर्ट	24-26
16.	निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख–2022	27-29
17.	राजभाषा पखवाड़ा वर्ष–2022 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सूची	30
18.	हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त कार्मिक-वर्ष-2022	31-32
19.	हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं एवं हिन्दी प्रतियोगिताएं	33-34
20.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम	35-36
21.	जांच बिन्दुओं का अनुपालन	37-38
22.	लुधियाना की कुछ प्रसिद्ध हस्तियाँ	39-40
23.	विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कार्यकलापों की झलकियाँ	41-42
24.	विभागीय फोटो	43-46

पंजज्योति

अंक–6, वर्ष 2022–23

संरक्षक

प्राणेश कुमार सिन्हा
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सरोज कुमारी
कार्यालय अधीक्षक

राजू कुमार
सहायक

खुशदीप सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

पत्रिका समिति

अश्वनी कुमार सेठ
सहायक निदेशक

सत्यवान सिंह
सहायक निदेशक

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

प्रकाशक :-

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

दूरभाष: 0161-2670838-42, 2671839 टोल फ्री नं: 1800-180-0026
वेबसाईट: www.sroludhiana.esic.gov.in ई-मेल: sro-ludhiana@esic.gov.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का दायित्व संबधित लेखक का है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है। यह पत्रिका केवल नि:शुल्क सीमित वितरण के लिए है।

राजेन्द्र कुमार (आईएएस)
महानिदेशक

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारत का मेंचेस्टर कहे जाने वाले लुधियाना में स्थित क.रा.बी. निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय की हिन्दी पत्रिका **"पंजज्योति"** के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह सही है कि पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों के सामूहिक प्रयासों का फल होता है तथा यह कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार करता है। आशा है कि **"पंजज्योति"** में संगठन से संबधित जानकारियों के साथ–साथ लुधियाना के इतिहास, पर्यटन और संस्कृति से संबधित सूचनाएँ भी शामिल की जाएंगी। निःसंदेह पत्रिका के प्रकाशन से कार्मिकों को भी अपने विचारों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का मौका मिलेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

श्री प्राणेश सिन्हा
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
लुधियाना।

टी.एल. यादेन
वित्त आयुक्त
आईपी एवं टीए एवं एफएस

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना अपनी हिन्दी गृहत्रिका **"पंजज्योति"** के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। विश्वास है कि कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में पंजज्योति उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

टी. एल. यादेन

(टी. एल. यादेन)

श्री प्राणेश कुमार सिन्हा
प्रभारी उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
लुधियाना।

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना अपनी गृह पत्रिका "पंजज्योति" के अंक 6 का प्रकाशन करने जा रहा है। गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय के कार्मिकों का सामूहिक प्रयास होता है जिसमे सृजनात्मक क्षमता के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों की भी झलक मिलती है। पंजज्योति के सफल प्रकाशन के लिए प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाओं सहित।

9.8.23

बीमा आयुक्त (राजभाषा)

श्री प्राणेश कुमार सिन्हा
प्रभारी उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
लुधियाना।

प्राणेश कुमार सिन्हा
उप निदेशक (प्रभारी)

संरक्षक की कलम से

प्रिय साथियों,

हार्दिक अभिनंदन।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के नए अंक की प्रस्तुति मेरे लिए अपूर्व आनंद व हर्ष का विषय है। यह हमारे प्रबुद्ध पाठकों के सुझाव व उत्साह तथा साथी अधिकारी/कर्मचारियों के रचनात्मक सहयोग का प्रतिफल है कि एक और नए अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

यह सूचित करते हुए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना भाषायी वर्गीकरण के आधार पर 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत आने के बावजूद, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। यह पत्रिका ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ सभी कर्मचारियों/अधिकारियों की रचनाधर्मिता व मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति का आयाम तथा संपादन मंडल के अथक प्रयास का सफल परिणाम है।

अपनी बात इस आशा और विश्वास के साथ समाप्त करना चाहूंगा कि ''पंजज्योति'' का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर पुनः खरा उतरेगा। प्रबुद्ध पाठकों से यह भी आशा रहेगी कि वे इस अंक को लेकर अपने विचारों व सुझावों से हमें प्रोत्साहित करेंगे।

(हस्ता.)
(प्राणेश कुमार सिन्हा)

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

संपादकीय

राजभाषा पत्रिका ''पंजज्योति'' का 6ठा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास का ही फल है। इस कार्यालय में लंबे समय से राजभाषा संवर्ग के कार्मिकों की मौजूदगी नहीं होने के बावजूद कार्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य करता रहा है। कार्यालय नराकास के सभी कार्यकलापों में न केवल भाग लेता रहा है अपितु पुरस्कार भी जीतता रहा है। कार्मिक राजभाषा से जुड़े सभी आयोजनों में उत्सव की तरह भाग लेते हैं। हिंदी में कार्य करने का वातावरण भी बेजोड़ है। पत्रिका का यह अंक इसी उत्साह और वातावरण का प्रतिफल है।

कार्यालय में गृह पत्रिका प्रकाशन की महत्ता पर ज्यादा कहने की आवश्यकता नहीं है। आशा है पत्रिका कार्यालय की भावनाएं आप तक पहुंचाने में सक्षम रहेगी। इस संबंध में शुभाशीष स्वरूप प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

(हस्ता.)
(सतीश कुमार)

इंडोर गार्डन- भविष्य का गार्डन

श्री राजू कुमार
सहायक

जब गार्डनिंग की बात होती है तो हमेशा जेहन में ऐसे बगीचे की कल्पना आती है जो बड़े–बड़े फूलों की क्यारियों से भरा हो। जिसमें आम, महुआ, पीपल, और बरगद के पेड़ आच्छादित हों। परन्तु अगर हम भविष्य के बगीचे की बात करें तो बगीचे का प्रारूप ऐसा हो जाएगा जो न केवल हमारे घरों बल्कि हमारी मेज और किचन तक सिमट कर रह जाएगा। जिस तरह से प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है और लोगों को शुद्ध हवा और वातावरण की आवश्यकता महसूस हो रही है, उस लिहाज से देखा जाए तो निकट भविष्य में हमारा घर ही गार्डन का रूप ले लेगा। आपको बताते चलें कि ऐसा नहीं है कि आज हमारे घरों में गार्डनिंग की परिकल्पना कोई नई बात है, बल्कि इस बारे में चर्चा आज आम हो गई है। आज भी हमारे बगीचे की परिकल्पना में इंडोर गार्डन और किचन गार्डन को रखा जाता है। किचन गार्डन आजकल काफी लोकप्रिय भी हुआ है क्योंकि घर की महिलाएं अपने बचे हुए समय में मनोरंजन की जगह किचन गार्डनिंग करना पसंद करने लगी हैं। बात की जाए इंडोर गार्डन की तो इंडोर गार्डन की सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि इससे कम मेहनत और लागत में कुदरत को बिल्कुल करीब से महसूस किया जा सकता है और घर को भी तरोताजा रखा जा सकता है। थोड़ी सी इसकी देखभाल और तकनीकी पहलुओं का ध्यान रखना पड़ता है। तो चलिए, आज बात करते हैं इंडोर गार्डन के विभिन्न पहलुओं की जो हमारे लिए काफी रोचक और आनंददायी भी हो सकती है।

1. पौधों का चयन :-

इंडोर गार्डन में ऐसे पौधों का चयन किया जाता है जो बारहमासी हो और जिसको कम रोशनी की आवश्यकता हो। परंतु ऐसा नहीं है कि इस अवधारणा के अनुसार ऐसे पौधे को इंडोर गार्डन में नहीं लिया जा सकता है जिसे अत्यधिक रोशनी की आवश्यकता हो। आज इंडोर गार्डन की अवधारणा काफी विस्तृत हो चुकी है तथा आज के इंडोर गार्डन में ऐसे–ऐसे पौधे का भी चयन किया जाने लगा है जो कि आमतौर पर परंपरागत बगीचे (ट्रेडिशनल गार्डन) के अनुसार उसे आउटडोर ही माना जाता था उदाहरण के लिए आप बेली, मोगरा, चमेली, गेंदा या गुलाब के पौधे को भी इंडोर बना सकते हैं परन्तु इसके लिए कुछ खास तकनीक की आवश्यकता होती है। इंडोर गार्डन में आम तौर पर ट्रॉपिकल पौधों

को ही लिया जाता है, जैसे फर्न, पाम के विभिन्न प्रकार, स्पाइडर प्लांट, स्नेक प्लांट, रबड़ प्लांट, डफन वेसिया, क्रोटन, ड्रेसिना, पैथोज या मनी प्लांट आदि।

2. माध्यम या सबस्ट्रेट का चयन :-

इंडोर गार्डन में उगाए जाने वाले पौधे आमतौर पर ऐसे माध्यम में उगाए जाते हैं जिसमें नमी कम तथा भरपूर वायुसंचार (एरिएशन) की क्षमता मौजूद हो तथा जो हल्का हो। आमतौर पर ऐसी मिट्टी का चयन किया जाता है जिसमें पानी ज्यादा न ठहरे तथा पौधों की जड़ों को ग्रोथ करने के लिए उचित मात्रा में ऑक्सीजन उपलब्ध हो सके। इंडोर गार्डन के लिए माध्यम के रुप में कोकोपीट, क्ले बॉल, परलाइट, वर्मीक्यूलाइट, कोको चिप्स, पीट मॉस, स्फैग्नम मॉस आदि का इस्तेमाल किया जाता है। ये उचित मात्रा में पानी का अवशोषण करते हैं तथा पौधे की जड़ों को वायुसंचार (एरिएशन) भी उपलब्ध कराते हैं, जिससे कि उन्हें ऑक्सीजन बराबर मात्रा में मिलती रहे। इसके अलावा, इन माध्यमों में पानी की अनावश्यक मात्रा ड्रेनेज के रुप में बहकर पॉट से बाहर निकल जाती है। इस कारण यह माध्यम इंडोर पौधे के लिए उचित होता है।

3. रोशनी की उपलब्धता :-

इंडोर गार्डन में ऐसे पौधों का चयन किया जाता है जिन्हें रोशनी की कम आवश्यकता हो परंतु नई तकनीक और समय की मांग के कारण ऐसे पौधों की भी आवश्यकता महसूस हुई है जो आमतौर पर आउटडोर गार्डन में इस्तेमाल किया जाता रहा है। अक्सर फूल देने वाले पौधे को भी इंडोर गार्डन के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा है। परन्तु अगर देखा जाए तो आउटडोर पौधे को इंडोर पौधे के रूप में तब तक परिवर्तित नहीं किया जा सकता है जब तक उसे उचित मात्रा में रोशनी या दृश्य प्रकाश के विशेष वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम) का संयोजन (कंबीनेशन) उपलब्ध न करा दिया जाए। अक्सर हम ग्रो लाइट के बारे में सुनते रहते हैं। ग्रो लाइट की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि पौधे को घर के अंदर विकास करने के लिए प्रकाश के कुछ खास वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम) की आवश्यकता होती है जो आमतौर पर लाल, हरे और नीली रोशनी के संयोजन से मिलकर बनता है। ग्रो लाइट में भी इन्ही तीन रंगो का संयोजन इस्तेमाल किया जाता है। इसे आम तौर पर आरजीबी लाइट कहते हैं। आजकल इंडोर गार्डन में आरजीबी लाइट का प्रचलन काफी बढ़ गया है। इस लाइट के इस्तेमाल से पौधे को अंधेरे कमरे में भी आसानी और सुगमता से उगाया जा सकता है।

4. पोषक तत्व :-

इंडोर गार्डन में रखे जाने वाले पौधे को पोषक तत्व की भी काफी मात्रा में आवश्यकता होती है क्योंकि इंडोर गार्डन में उगाये जाने वाले पौधे को एक समान तापमान व वातावरण की आवश्यकता होती है और अनुकूल मौसम व तापमान के कारण पौधे में काफी अच्छी ग्रोथ होती है जिसके लिए इन्हें पोषक तत्वों की अच्छी–खासी मात्रा की आवश्यकता होती है। जहाँ तक बात है पोषक तत्व की तो किसी भी पौधे की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम जैसे तीन मुख्य पोषक तत्वों की एक बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है। अगर संक्षिप्त रूप में कहा जाए तो इसे एन.पी.के. भी कहते हैं। एन.पी.के. खाद काफी प्रचलन में है और यह नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम का ही एक विशेष संयोजन है। एन.पी.के. भी कई तरह के कंबीनेशन में आते हैं जो अलग–अलग अनुपात में होते हैं। जैसे कि 19:19:19, 20:10:10, 11:16:14। इस तरह के अलग–अलग अनुपात वाले एन.पी.के. बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त इन्हें अल्प मात्रा में सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोन्यूट्रिएंट) जैसे कॉपर, कोबाल्ट, आयरन, निकेल, जिंक, मैग्नीशियम, बोरोन आदि की भी आवश्यकता होती है। बाजार में माइक्रोन्यूट्रिएंट के कई तरह के पाउडर या घोल उपलब्ध है जो कि आप आसानी से किसी भी दुकान से या आजकल ऑनलाइन माध्यम से भी प्राप्त कर सकते हैं। इसे महीने में दो बार इस्तेमाल करके पौधे को स्वस्थ रख सकते हैं।

5. रोगरोधक तत्व :-

इंडोर गार्डन में उगाए जाने वाले पौधे की सबसे बड़ी समस्या फंगस, बैक्टीरिया व छोटे–छोटे कीट–पतंगो के हमले की होती है। यदि सही समय पर उपचार नहीं किया जाए तो पौधे बीमार होकर सूख सकते हैं। इसलिए इसके बचाव हेतु समय–समय पर फंगसरोधी रसायन एवं जीवाणुरोधी रसायन का इस्तेमाल कर सकते हैं। पौधों की जड़ों को स्वस्थ्य रखने के लिए ऑक्सीजन परऑक्साइड का भी इस्तेमाल किया जा सकता है जोकि किसी भी दवा की दुकान पर आसानी से उपलब्ध हो जाएगा। ऑक्सीजन परऑक्साइड का भी इस्तेमाल सावधानी पूर्वक करना चाहिए क्योंकि यह एक खतरनाक रसायन होता है जिसे बच्चों की पहुंच से दूर रखना चाहिए। समय–समय पर बीमार पौधों को सुबह व शाम को सूर्य की रोशनी में रखें। सूर्य के प्रकाश में पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणें होती हैं जिनके कारण फंगस व बैक्टीरिया समाप्त हो जाते हैं।

6. पात्र (पॉट) का चयन :-

इंडोर गार्डन में उगाए जाने वाले पौधों के लिए प्लांटर/पॉट या पात्र के चयन को काफी समझदारी पूर्वक करने की आवश्यकता होती है। चूंकि इंडोर गार्डन में पौधे को पानी की आवश्यकता बिल्कुल ही कम होती है, इस कारण ऐसे पात्र का चयन करना चाहिए जिसमें पानी का ठहराव बिल्कुल भी न हो एवं पौधों की जड़ों के लिए ऑक्सीजन आसानी से मिल सके। इसके लिए आप टेराकोटा पॉट या सिरेमिक पॉट का इस्तेमाल कर सकते हैं जो टिकाऊ व पानी के बहाव (ड्रेनिंग) के लिए काफी अच्छा होता है। प्लास्टिक के पॉट का भी इस्तेमाल किया जा सकता है, परंतु ध्यान रहे पौधों की जड़ों को ऑक्सीजन पर्याप्त मात्रा में मिले, इसके लिए हल्की और रंध्रयुक्त मिट्टी का इस्तेमाल करना चाहिए तथा प्लांटर की तली में एक छेद जरूर करें जिससे कि पानी का अनावश्यक जमाव न हो। अगर ऐसे पात्र का चयन किया जाएगा जिसमें पानी के बहाव की समस्या हो और जड़ों के लिए वायुसंचार (एरिएसन) सिस्टम न हो तो पौधे की जड़ें सड़ जाएंगी और पौधा बीमार हो जाएगा। इसलिए इंडोर गार्डन में पौधे के पात्र का चयन काफी समझदारी पूर्वक किया जाता है।

7. नमी और हवा की मात्रा :-

जब भी हम इंडोर गार्डन की बात करते हैं तो सबसे महत्वपूर्ण तत्व जिसे हम अक्सर नजरअंदाज करते हैं, वह है नमी और हवा की मात्रा। अगर हम इंडोर गार्डन में पौधे को ऐसे कमरे में रखेंगे जहाँ उचित मात्रा में हवा और नमी उपलब्ध न हो तो पौधा बीमार होने लगेगा, क्योंकि अत्यधिक नमी या हवा की मात्रा से पौधे के अंदर फंगस और बैक्टीरिया के हमले का खतरा बना रहता है। नमी की मात्रा कम होने से पौधे के अंदर नमी कम हो जाएगी और पौधा सूखने लगेगा।

आउटडोर गार्डन के अंदर पौधे की नमी, तापमान और हवा की मात्रा को प्रकृति द्‌वारा नियंत्रित किया जाता है जिस कारण से विशेष देखभाल की आवश्यकता महसूस नहीं होती। जबकि इसी पौधे को अगर आप किसी कमरे के अंदर रखेंगे तो उसे एक विशेष अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होगी जो उन्हें प्रकृति के अनुरूप मिले। कमरे के तापमान को पंखे या वातानुकूलित उपकरणों द्‌वारा नियंत्रित किया जा सकता है जबकि नमी को हयूमिडीफायर मशीन द्‌वारा नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा रोशनदान और खिड़की का भी इस्तेमाल, इसे प्रकृति के अनुरुप बनाने के लिए किया जा सकता है। किसी भी पौधे के लिए आदर्श तापमान 20 से 30 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए, जबकि नमी की

मात्रा 20 से 60% के बीच होनी चाहिए। अगर आप तापमान या आद्रता इस आदर्श स्तर से कम या अधिक करेंगे तो पौधे का विकास प्रभावित होगा। इसके अलावा किसी भी पौधे के लिए हवा की पर्याप्त मात्रा भी आवश्यक होती है। हवा में उपलब्ध कार्बन–डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन पौधों के विकास के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए इंडोर पौधों को ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहां हवा का बहाव हो। इसके लिए रोशनदान, खिड़की, गलियारा व दरवाजे के पास का स्थान सबसे उपयुक्त होता है।

8. इंडोर-गार्डन की नई अवधारणा :-

इंडोर गार्डन की नई अवधारणा में केवल पॉट में ही पौधे लगाने को इंडोर-गार्डन नहीं माना जाता है। आज की बढ़ती तकनीक में इंडोर-गार्डन की ये अवधारणा अब बदल चुकी है और इसका दायरा काफी बढ़ गया है। अब तो इंडोर–गार्डन के अंतर्गत डेक्सटॉप गार्डन, टेबल गार्डन, किचन गार्डन, फेयरी गार्डन, डाइनिंग गार्डन, वर्टिकल गार्डन, हैंगिंग गार्डन और मिनिएचर गार्डन आदि कई रूप देखने को मिलते हैं। इंडोर-गार्डन में किचन गार्डन, डेस्कटॉप गार्डन प्रारुप काफी लोकप्रिय हुआ है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि यह कम जगह में काफी आकर्षक रूप में बनाया जा सकता है। इसे घर के किसी कोने, टेबल का किनारा, रसोई का स्लैब आदि पर आसानी से समायोजित किया जा सकता है। आजकल घर को सजाने के लिए कृत्रिम साज-सज्जा के स्थान पर फेयरी गार्डन का इस्तेमाल किया जाने लगा है जोकि देखने में काफी सुंदर होता है। इसमें छोटे–छोटे (मिनिएचर) खिलौने का इस्तेमाल सजाने में किया जाता है जिसे देखकर आप अपने बचपन की यादें तरोताजा कर कल्पनाओं की दुनियाँ में खो सकते हैं। इसमें ऐसे छोटे पौधों का चयन किया जाता है जो आमतौर पर पांच–छह इंच से ज्यादा नहीं बढ़ते हैं या ज्यादा से ज्यादा वो एक फुट तक ही रहते हैं। इस तरह के पौधे को खास तरह के पॉट में लगाया जाता है। अगर भविष्य की बात की जाए तो एक पॉकेट गार्डन की भी अवधारणा हो सकती है जो कि ऐसे चलता फिरता गार्डन होगा जिसे हम कहीं भी ले जाकर फोल्ड कर सकते हैं और फिर उसे अपने अनुकूल जगह पर खोल सकते हैं। आजकल बेडरुम गार्डन या डाइनिंग गार्डन या वर्टिकल गार्डन की भी मांग तेजी से बढ़ रही हैं। आज से पहले हम अपनी दीवारों को सजाने के लिए कृत्रिम हस्तशिल्प (आर्टिफिशियल हैंडीक्राफ्ट्स) या

आर्टिफिशियल पौधों का इस्तेमाल करते थे, परंतु निकट भविष्य में जीवित पौधे का इस्तेमाल करने की संभावना अत्यधिक बढ़ गई है। किचन गार्डन की बात की जाए तो आजकल गृहणियाँ इलेक्ट्रोनिक मनोरंजन के साधनों से समय निकालकर, अपनी रूचि से घर बैठे अपनी रसोई के लिए छोटी-मोटी सब्जियां जैसे-धनिया, पुदीना, हरा साग और सलाद जैसे टमाटर, लहसुन, प्याज आदि घर में भी उगाने लगी हैं। ये रोज़मर्रा की सबसे उपयोगी साग सब्जियां हैं जो स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ-साथ जेब खर्च के वजन को भी कम करती हैं।

9. इंडोर गार्डन के फायदे :-

इंडोर गार्डन की सबसे बड़ी खासियत और फायदा यह है कि यह हमारे घर को जीवंत और प्राकृतिक स्वरूप में कुदरत के करीब महसूस कराता है। घर न केवल सुंदर दिखता है बल्कि यह सकारात्मक उर्जा से भी भरा रहता है। इंडोर पौधों से घर के सभी सदस्यों पर इसका सकारात्मक असर पड़ता है और उन्हें दैनिक जीवन की भाग-दौड़ के तनाव से राहत दिलाने के साथ-साथ संतुष्टि के स्तर को भी बढ़ाता है। बच्चों में पौधों को लगाने व समझने की जिज्ञासा के कारण उनमें रचनात्मक क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ता है। अध्ययन में यह पाया गया है कि जिस घर में इंडोर गार्डन का प्रचलन है उनके घरों का तापमान औसतन 2-4 डिग्री सेल्सियस कम होता है जो कि घर की बिजली खपत को कम करके घर खर्च को कम करता है। औषधीय गुणों वाले पौधे लगाने से घर स्वच्छ व रोगाणु रहित रहता है और परिवार के सभी सदस्यों को स्वस्थ रखता है। इसके अतिरिक्त बढ़ते प्रदूषण के कारण जहां लोगों को वायु शुद्धीकरण मशीन की आवश्यकता महसूस हो रही है इंडोर गार्डन वाले घरों में इसकी कोई आवश्यकता नहीं होती है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो इंडोर गार्डन स्थापित करने की लागत थोड़ी सी ज्यादा तो जरूर होती है परंतु इसके फायदों को देखा जाए तो यह काफी सस्ता सौदा प्रतीत होता है। यह एक कामधेनु के जैसा है जिसकी एक बार सेवा करने पर केवल फल और फल ही प्राप्त होता है।

हम-तुम

श्रीमती शशि
(पत्नी श्री सत्यवान सिंह,
सहायक निदेशक)

मैं दिन का चंचल सूरज हूँ,
हो तुम रातों के चाँद प्रिय,
मैं सोती हूँ तुम जागते हो,
किस तरह मिलें जज्बात प्रिय।

तुम अवचेतन का स्वप्न हो,
मैं हूँ यथार्थ का मान प्रिय,
मैं तपती धरती का हृदय,
तुम शीतलता का राग प्रिय।

इस झूठी कपटी दुनियाँ में,
तुम हो सच का पर्याय प्रिय,
जब घिरूँ कभी कठिनाई में,
तुम ईश्वर का एहसास प्रिय।

मैं इठलाती चंचल नदिया,
तुम गंभीर विस्तृत सागर प्रिय,
तुम बाँहें पसारे खड़े हुए,
कब आन मिलूँ तुमसे प्रिय।

मैं धीमी लय हूँ स्वरों की,
तुम द्रुत लय का गान प्रिय,
तुम सात सुरों का संगम हो
मैं दो तारों का साज प्रिय।

भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय

श्री मुकेश कुमार
सहायक

भारत को विश्व गुरू कहा जाता है। भारत को विश्व गुरू मानने के पीछे कई कारण हैं। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है जिसका धर्म, दर्शन, अध्यात्म, गणित, विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र आदि क्षेत्र में इस भूमि का अतुल्य अवदान रहा है। बात जब भारत में प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की हो तो इसके लिए भी पूरी दुनिया भारत की आभारी है।

भारत के लिए यह भी गौरव की बात है कि जब पूरा विश्व अंधकार में डूबा था, जब ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज जैसे विश्वविद्यालयों का कोई अस्तित्व नहीं था, तब हम कई अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय चला रहे थे। चलिए भारत के गौरवशाली अतीत की एक सैर करते हैं।

नालंदा

नालंदा विश्वविद्यालय को विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय माना जाता है। यह प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों में काफी महत्त्वपूर्ण तथा समृद्ध था। ऐसा माना जाता है कि यह स्थल प्रारंभ से ही बौद्ध शिक्षण केन्द्र रहा था। गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय ने यहां एक बौद्ध विहार का निर्माण कराया जो कि कालांतर में प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया। बाद में कई राजाओं ने इस विश्वविद्यालय की समृद्धि में काफी योगदान दिया।

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस विश्वविद्यालय में छह वर्ष रहकर अध्ययन किया था। उनके अनुसार इस विश्वविद्यालय में कुल दस हजार छात्र तथा लगभग पंद्रह सौ शिक्षक यहां पठन-पाठन का कार्य करते थे। इस विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए सुदूर के देशों यथा चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, बर्मा, थाइलैंड आदि से पढ़ने के लिए छात्र आते थे। ऐसा माना जाता था कि इस विश्वविद्यालय से पढ़कर निकले छात्रों की समाज में काफी प्रतिष्ठा होती थी।

इस विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना भी काफी कठिन था। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों की प्रवेश परीक्षा विश्वविद्यालय के द्वारपाल द्वारा ली जाती थी। इससे इस विश्वविद्यालय के शिक्षण के स्तर का अंदाजा लगाया जा सकता है। विश्वविद्यालय परिसर में ही शिक्षकों एवं छात्रों के लिए रहने तथा खाने की भी व्यवस्था थी।

इस विश्वविद्यालय में हिन्दू, बौद्ध धर्म एवं दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, दर्शन शास्त्र, खगोलशास्त्र, शल्यक्रिया आदि विषयों की पढ़ाई की जाती थी। शीलभद्र, नागार्जुन, आसंग, बसुबंधु, आर्यभट्ट आदि प्रसिद्ध विद्वान नालंदा से ही संबंध रखते थे।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

प्राचीन विक्रमशिला विश्वविद्यालय वर्तमान में बिहार के भागलपुर जिले में स्थित था। इसकी स्थापना पाल नरेश धर्मपाल द्वारा कराई गई थी। यह विश्वविद्यालय नालंदा तथा ओदंतपुरी के समकालीन था। तिब्बत के साथ इस विश्वविद्यालय का घनिष्ठ संबंध था। अतीश दीपंकर, रत्नकीर्ति, आनंदगर्भ जैसे प्रसिद विद्वान इस शिक्षण संस्थान से संबंध रखते थे। इस विश्वविद्यालय में हिन्दू बौद्ध धर्म एवं दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, दर्शन शास्त्र, खगोलशास्त्र, शल्यक्रिया, न्यायशास्त्र आदि विषयों की पढ़ाई करायी जाती थी। नालंदा विश्वविद्यालय की तरह भी यहां दूर–दूर से छात्र अध्ययन करने के लिए आते थे। उनमें तिब्बत से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या ज्यादा थी। तिब्बत के साथ इस विश्वविद्यालय का घनिष्ठ संबंध था। तिब्बत सम्राट के निमंत्रण पर दीपंकर अतीश ने वहां की यात्रा की थी। ऐसा माना जाता है कि तुर्की आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया था।

ओदंतपुरी विश्वविद्यालय

यह विश्वविद्यालय बिहार के वर्तमान शहर बिहारशरीफ में स्थित था। इसकी स्थापना पाल नरेश गोपाल ने लगभग आठवीं शताब्दी में की थी। यह विश्वविद्यालय भी नालंदा, विक्रमशिला विश्वविद्यालयों के समान जगत प्रसिद्ध था।

इस विश्वविद्यालय का तिब्बत में बौद्ध धर्म प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान था। तिब्बत के प्रथम बौद्ध महाविहार साम्ये की वास्तुकला इसी विश्वविद्यालय की प्रतिकृति थी। इस विश्वविद्यालय का अभी तक उत्खनन नहीं हो सका है क्योंकि इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष के ऊपर पूरा बिहारशरीफ शहर बसा है। इस कारण इस विश्वविद्यालय के बारे में बहुत जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। तथापि तिब्बती विद्वान लामा तारानाथ की किताब "भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास" पुस्तक से बहुत सारी जानकारी मिल जाती है। इसके अतिरिक्त मिनहाज सिराज की पुस्तक "ताब्कात-ए-नासिरी" पुस्तक में भी इस शहर के बारे में काफी उल्लेख मिलता है।

तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय पर आक्रमण किया था जिससे इस विश्वविद्यालय की महत्ता का पता चलता है। ऐसा माना जाता है कि इस विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि नालंदा एवं विक्रमशिला से ज्यादा हो गई थी जबकि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से महज 12 किलोमीटर की दूरी पर यह विश्वविद्यालय स्थित था। तुर्की आक्रमणकारियों ने 1197 में इस महाविहार पर आक्रमण करके नष्ट कर दिया था। इसके उपरांत उनके द्वारा नालंदा तथा विक्रमशिला आदि महाविहारों को भी नष्ट कर दिया गया था।

तेलहाड़ा

तेलहाड़ा विश्वविद्यालय का हाल ही में उत्खनन किया गया है। कई विद्वान इस शिक्षण संस्थान को ही ह्वेनसांग द्वारा उल्लिखित तिलक विश्वविद्यालय मानते हैं। चूंकि इस विश्वविद्यालय का उत्खनन जारी है। अतः इसके विस्तृत इतिहास से परिचित होना शेष है। तथापि कार्बन डेटिंग से यह पता चला है कि यह विश्वविद्यालय नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय से भी प्राचीन है। यहां यह भी उल्लेख करना यथोचित होगा कि यह विश्वविद्यालय प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से लगभग 20 किलोमीटर तथा ओदंतपुरी विश्वविद्यालय से भी लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। यानि लगभग 20 किलोमीटर के दायरे में तीन महान विश्वविद्यालयों का स्थित होना, हमें हतप्रभ करता है। साथ ही हमारी प्राचीन गौरवशाली शिक्षण व्यवस्था के प्रति मन में आदर भी जगाता है।

इंसानियत और रूहानियत संग-संग

सुश्री सपना रानी
प्रवर श्रेणी लिपिक

आज संसार में एक दौड़ सी लगी है। स्वयं को दूसरों से बेहतर बनाने की, दूसरों से आगे जाने की। हर व्यक्ति अपने आपको विशेष बनाने का प्रयास कर रहा है और इस यात्रा में न जाने क्या–क्या बनता चला जा रहा है। आज व्यक्ति बैर, नफरत, विरोध, मतभेद के चलते पता नहीं कब दुश्मनी का रूप लेकर एक दूसरे को खत्म करने पर आमादा हो उठे। सिर्फ इंसान के रूप में इंसान जन्म ले लेने से कोई इंसान नहीं बनता। आज तक किसी घोड़े को नहीं कहा गया कि तू घोड़ा बन जा। किसी कुत्ते को नहीं कहा गया कि तू कुत्ता बन जा। केवल इंसान को ही कहा जाता है कि तू इंसान बन जा। धर्म कोई भी हो संदेश यही होता है कि "कुछ भी बनो मुबारक है, पर पहले इन्सान बनो।"

किसी शायर ने भी क्या खूब लिखा है "गली में मकान थे, मकानों पर नाम थे, नाम के साथ ओहदे थे, बहुत देखा कोई इंसान न मिला"। जब तक इंसान में इन्सानियत के गुण, प्रीत, प्यार, नम्रता, सहनशीलता, विशालता आदि नहीं हैं तो इंसान, इंसान कहलाने के लायक नहीं है और रूहानियत के बिना तो इंसानियत संभव ही नहीं है।

वास्तव में देखा जाए तो इंसानियत और रूहानियत का बहुत निकट का संबंध है। दोनों के साथ–साथ चलने से ही जीवन सुशोभित होता है। मानव जीवन का फूलों की तरह खिलना खुश रहना ही इंसानियत है और जीवन का फूलों की तरह महकना ही रूहानियत है।

एक बार कुछ नौजवान एक पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। चढ़ते–चढ़ते उन्हें थकान महसूस हुई और वे आराम करने के लिए बैठ गए। इतने में वो देखते हैं कि एक छोटी सी लड़की पीठ पर एक छोटे से बच्चे को उठाए पहाड़ी पर चढ़ रही हैं। उन नवयुवकों ने उस लड़की से पूछ लिया, "तू थकी नहीं, इतना बोझ उठाकर पहाड़ी पर चढ़ रही है"। उस लड़की ने बड़े सहज स्वर में उत्तर दिया, "थकना क्यों, यह तो मेरा अपना भाई है।" कहते–कहते वह पहाड़ी पर आगे बढ़ गई और एक सीख दे गई कि जहां अपनापन है वहां बोझ, बोझ नहीं लगता। सबके लिए यह अपनेपन का भाव इंसानियत और रूहानियत से भरपूर जीवन से आ सकता है। जब तक हम जात–पात के नाम पर, धर्म के नाम पर एक–दूसरे से नफरत करते रहेंगे तब तक इंसानियत और रूहानियत संग–संग नहीं हो सकती। कहा भी गया है किः–

"हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, इको रब दे बन्दे ने।
बन्दा समझ के प्यार है करना, चंगे भावे मंदे ने।।"

‘बचत’

श्री नीरज कुमार
सहायक

आज हर कोई बचत की बात करता है। जी हाँ वही पैसे की बचत, समय की बचत। होना भी चाहिए क्योंकि निकट भविष्य में, यह काम जो आने वाला है। किन्तु कितनी बचत? यह तय नहीं है। मानव अपने–अपने हिसाब से बचत करता है। फिर भी उसे पश्चाताप का सामना करना पड़ता है। मानव अपने अतीत की बचत दर को याद कर पश्चाताप करता है और अच्छा भविष्य हो, इसके लिए चिंतन करता है। किन्तु बिडम्बना यह है कि जिस वर्तमान में मानव पश्चाताप व चिंतन करता है, वह भी अच्छा नहीं होता है।

बचत की बात करते हैं तो यह सिर्फ मानव तक ही सीमित नहीं है अपितु पशु–पक्षी, कीट–पतंगे भी बचत करते हैं। आप चींटी को ही देख लीजिए। यह अपने भोजन की बचत करती हैं, इसलिए कि विपरीत समय में काम आएगा। पर होता क्या है? बरसात आते ही उसके घर में पानी घुस आता है और बचा हुआ भोजन नष्ट हो जाता है। बावजूद इसके चींटी भ्रमवश भोजन इकट्ठा करती रहती है क्योंकि इसे पता नहीं है कि यह प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है। उसने नियम का उल्लंघन किया हैं। नियमानुसार जो है, उसका अंत तय है।

खैर छोड़िए इन सब बातों को, बचत तो मैं भी करना चाहता था। अपने बाल सम–विषम लिंगीय मित्रों की दोस्ती की। वही दोस्ती जिसे बनाने में वर्षों लग जाते हैं, बावजूद इसके वैसे विश्वास का अभाव ही महसूस होता है। मैं बचत करना चाहता था माँ के प्रेम, गोद, लोरी, आँचल स्नेह तथा बाल स्वरूप की, जिसकी अति आवश्यकता आज हमें है। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि इस प्रकार की बचत के लिए विदेशों तक कोई बैंक दिखाई नहीं देता है। मैं बचत करना चाहता था मेरी ऊँगली थामे पिता के उन हाथों वाले पलों की जिनके सहारे मैं पहली बार चलना सीखा, उन कंधों वाले पलों को जिसने सबसे पहले मुझे यातायात का अनुभव कराया, जिसके अभाव में आज जीवन रूपी पथ पर मेरे पैर डगमगा रहे हैं। मैं चाहकर भी इसे संभाल नहीं पा रहा हूँ।

मैं बचत करना चाहता था, अब तक के पढ़े गए तथ्यों की, बचपन में रिश्तेदारों द्वारा मिले पैसों की किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि मैं समझता हूँ कि बचपन में बचत करने की शक्ति मानवों में कम होती है। किन्तु जैसे–जैसे आयु और भौतिक शरीर में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे बचत शक्ति बढ़ती जाती है। शायद इसी बचत प्रवृति के कारण मानव आवश्यक चीजों का भी समय पर भोग नहीं कर पाता है।

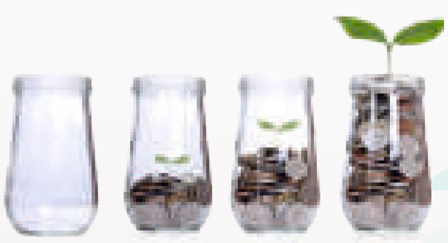

काश! जिंदगी सारस-सी होती

श्री राजू कुमार
सहायक

काश! मेरी जिंदगी,
एक सारस-सी होती,
नदी किनारे दौड़ता,
कनक-बाजरे खाता,
बुझ जाती जो पेट की आग,
वही रेत पर सो जाता,
पथराई पलकों में फिर,
एक मधुर स्वप्न जगमगाता,
काश! मेरी जिंदगी,
एक सारस- सी होती,
खूब होती आंख मिचौली,
स्वप्न परी संग हंसी ठिठोली,
बन जाता मैं भी परा,
और कोई ख्वाब मिल जाता,
काश! मेरी जिंदगी,
एक सारस- सी होती,
स्वप्नलोक के स्वर्णिम किस्से,
झोली भर-भर लाता,
उड़न खटोला बन शून्य गगन में,
हवा से रेस लगाता,
रिश्ते नाते और जज्बातों की,
बेड़ियां कहीं खो जाती।
काश! मेरी जिंदगी,
एक सारस-सी होती।।

राजस्थान - स्वादिष्ट व्यंजनों की भूमि

श्री खुशदीप सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

भारत के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित राजस्थान अपनी समृद्ध संस्कृति, इतिहास और परम्परा के लिए जाना जाता है लेकिन अपने प्रसिद्ध किलों, महलों और रेत के टीलों के अलावा राजस्थान मुंह में पानी लाने वाले व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ का व्यंजन, यहाँ की विषम रेगीस्तानी जलवायु और इस क्षेत्र में खाद्य सामग्री की उपलब्धता को दर्शाता है। यहां का भोजन सुगंधित और मसालेदार परन्तु स्वाद से भरा हुआ होता है।

राजस्थान के कुछ सबसे लोकप्रिय व्यंजन हैंः–

दाल-बाटी-चूरमा :-

यह राजस्थान के सबसे प्रसिद्ध व्यंजनों में से एक है और इसे अक्सर शादियों और विशेष अवसरों पर परोसा जाता है। इसमें गेहूं के आटे के गोले होते है जिन्हें मिट्टी से बने तंदूर में पकाया जाता है। फिर मसालेदार दाल के सूप, गुड और घी के साथ मिश्रित बाटी से बने चूरमे नामक मीठे व्यंजन के साथ परोसा जाता है।

गट्टे की सब्जी:-

यह व्यंजन बेसन के पकौड़े से बना होता है जिसे मसालेदार दही की ग्रेवी में पकाया जाता है। आमतौर पर पकौड़े बनाने के लिए बेसन को मसाले के साथ मिलाकर पानी में तब तक उबाला जाता है जब तक वह पक न जाए। गट्टे की सब्जी को दाल, चावल या रोटी के साथ परोसा जाता है।

बीकानेरी भुजिया:-

यह नाश्ता बेसन, मसालों और खाद्य तेल के मिश्रण से बनाया जाता है और इसका नाम राजस्थान के मशहूर शहर बीकानेर के नाम पर रखा गया है। यह कुरकुरी एवं मसालेदार होती है और इसे लंबे समय तक रखा जा सकता है।

अंत में राजस्थान के व्यंजन स्वादिष्ट और राज्य के समृद्ध इतिहास और संस्कृति को दर्शाते हैं। यदि कोई खाने का शौकीन हो तो उसे राजस्थान के स्वादिष्ट व्यंजनों को जरूर आजमाना चाहिए।

खत

श्रीमती खुशबू कुमारी
(पत्नी श्री नीरज कुमार, सहायक)

तुम खता करके भी खामोश रहो,
मैं बेगुनाही की भी माफी माँग लूं।
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें,
यह जिद तुम्हारी।

तुम शर्तों के घेरे में कैद कर दो मुझे,
मैं बेशर्त, मगर मोहब्बत करूँ तुमसे,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें,
यह जरूरत तुम्हारी।

तुम नजरअंदाज कर दो मेरी हर ख्वाहिश,
मैं पूरी करती रहूँ मगर हर जिद भी तुम्हारी,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें,
यह नियत तुम्हारी।

तुम कोशिश भी न करो मुझे मनाने की,
मैं रूठ कर भी मगर मनाती रहूँ तुम्हें ही,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें ,
यह हठ तुम्हारी।

तुम बढ़ते रहो नए रास्तों पे,
मैं ठहरी रहूँ मोड़ पे यू हीं,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें,
यह चाल तुम्हारी।

तुम नित बदलो रंग, चेहरा अपना,
मैं चाहती रहूँ तुम्हें एक जैसा ही,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें
यह उम्मीद तुम्हारी।

तुम न पढ़ो न समझो सवाल मेरे,
मैं तुम्हारी खामोशी में ढूँढती रहूँ जवाब मेरे,
कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें,
यह आदत तुम्हारी।

लुधियाना अर्थात लोधी-आना

लुधियाना शहर की स्थापना लोधी राजवंश के समय में हुई थी। इन्होंने 1451–1526 ई. तक दिल्ली पर शासन किया था। किंवदंती है कि इस क्षेत्र में सुचारु व्यवस्था बहाल करने के लिए सिकंदर लोधी (1489–1517 ई.) द्वारा दो लोधी प्रमुखों यूसुफ खान और निहंद खान को नियुक्त किया गया था। उन्होंने वर्तमान शहर लुधियाना के स्थान पर डेरा डाला जो उस समय ''मीर होता'' नामक एक गाँव था। उन्होंने गाँव ''मीर होता'' के स्थान पर वर्तमान शहर की 1480 में स्थापना की। नया शहर मूल रूप से लोधी–आना के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है लोधी का शहर। बाद में नाम बदलकर वर्तमान नाम लुधियाना कर दिया गया। प्रथम सिख युद्व (1845) में लुधियाना में एक बड़ी लड़ाई लड़ी गई। लुधियाना अब उसी नाम के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के साथ एक जिला मुख्यालय है। यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।

यह करीब 310 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह शहर सतलुज के पुराने किनारे पर स्थित है जो अब इसके 13 कि०मी० दक्षिण में है। वर्षों से शहर विभिन्न संस्कृतियों और गतिविधियों का एक जीवंत केन्द्र बन गया है।

यहाँ के प्रमुख व्यवसाय कपड़ा निर्माण, ऊनी वस्त्र, मशीन टूल्स तथा सिलाई मशीनों के इंजीनियरिंग उद्योग हैं। प्रसिद्व कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में स्थित है। इसके आस–पास स्थित कई गुरुद्वारों का भी ऐतिहासिक महत्त्व है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक लोधी किला भी है जो लगभग 500 वर्ष पुराना है। यहाँ का एक प्रमुख आर्कषण महाराजा रणजीत सिंह युद्ध संग्रहालय भी है जो पंजाब सरकार द्वारा देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले सैनिकों को श्रृद्धांजलि देने के लिए बनाया गया है।

पंजाब के इस शहर को होजरी उत्पादों के लिए ''भारत का मैनचेस्टर'' कहा जाता है।

शमशेर सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

रिपोर्ट

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना में हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस समारोह, वर्ष 2022 का आयोजन

मुख्यालय, नई दिल्ली के निदेशानुसार उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम लुधियाना में दिनांक 14 सितंबर 2022 से 29 सितंबर 2022 तक की अवधि के दौरान राजभाषा पखवाड़ा तथा दिनांक 29 सितंबर 2022 को "पखवाड़ा समापन समारोह" का आयोजन किया गया। राजभाषा पखवाड़े के प्रयोजनार्थ सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशानुसार अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने का अनुरोध किया गया। हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दृष्टि से प्रचार-सामग्री के रूप में राजभाषा नीति, अधिनियम, नियमों आदि संबंधी नमूने कार्यालय की सभी शाखाओं में परिचालित किए गए। ''राजभाषा पखवाड़ा'' के दौरान राजभाषा संबंधी समस्याओं के संबंध में राजभाषा कार्मिकों द्वारा कार्यालय की शाखाओं एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों से संपर्क स्थापित किया गया।

''राजभाषा पखवाड़ा'' के दौरान कार्यालय में निम्नलिखित हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :-

दिनांक 20.09.2022 हिंदी निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 21.09.2022 हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

दिनांक 22.09.2022 राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

दिनांक 29.09.2022 हिंदी वाक् प्रतियोगिता

उक्त प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी दिवस समारोह

"पखवाड़ा समापन समारोह'' दिनांक 29.09.2022 को मनाया गया। ''पखवाड़ा समापन समारोह'' का आयोजन उत्साहपूर्वक एवं सादगीपूर्ण ढंग से किया गया। समारोह की अध्यक्षता उप निदेशक (प्रभारी), श्री सुनील कुमार यादव ने की। कार्यालय सभागार में कार्यालय के सभी कर्मचारियों व अधिकारियों की उपस्थिति में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उप

निदेशक (प्रभारी) महोदय के साथ-साथ श्री कुं. अजय सिंह, उप निदेशक, श्री सत्यवान सिंह, सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा) एवं श्री अश्वनी कुमार सेठ, सहायक निदेशक भी उपस्थित थे।

''पखवाड़ा समापन समारोह'' में केन्द्र सरकार के कोविड–19 महामारी के दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यालय अध्यक्ष व अन्य अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्ज्वलन से किया गया। तदोपरांत सुश्री सपना रानी एवं उनके सहयोगियों द्वारा सरस्वती वंदना गा कर कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। कार्यालय अध्यक्ष की अनुमति से राजभाषा शाखा में तैनात सहायक, श्री राजू कुमार ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मंच का संचालन किया। अध्यक्ष महोदय ने "पखवाड़ा समापन समारोह'' के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री जी के द्वारा जारी संदेश का वाचन किया एवं कार्यालय में हिंदी के बढ़ते प्रयोग का उल्लेख किया और स्पष्ट किया कि किस तरह हिंदी हमारे कार्यालयी कार्यों में सहायक सिद्ध हो रही है। श्री सत्यवान सिंह, सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा) द्वारा अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना के संदेश का वाचन किया गया। तत्पश्चात सहायक, श्री राजू कुमार द्वारा विगत एक वर्ष में कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों और लक्ष्यों व उपलब्धियों की प्राप्ति के संबंध में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का अनुरोध किया गया जिसका समारोह में उपस्थित सभी कार्मिकों ने स्वागत किया। तत्पश्चात ''हिन्दी पखवाड़ा'' के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यालय अध्यक्ष व अन्य अधिकारियों के कर-कमलों से पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। समारोह के यादगार पलों को संजोए रखने के लिए पूरे समारोह के दौरान फोटो खींचे गए। इसी क्रम में प्रतियोगिता विजेता श्री मुकेश कुमार, सहायक एवं श्री आशीष कुमार सिंह, अवर श्रेणी लिपिक को अपने विचार साझा करने हेतु मंच पर आमंत्रित किया गया और उन्होंने पुरस्कार का संदर्भ देते हुए कार्यालय में राजभाषा के महत्व को बताया।

अगले चरण में, श्री सुनील कुमार यादव, उप निदेशक (प्रभारी) द्वारा कार्यालय में हिन्दी में सराहनीय कार्य करने हेतु प्रशासन शाखा व शाखा कार्यालय, ग्यासपुरा (लुधियाना) को प्रशस्ति-पत्र

प्रदान किया गया। कार्यालय अध्यक्ष ने अपने संबोधन में हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी और पुरस्कार विजेता कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि हिंदी आज किसी पहचान की मोहताज नहीं है। यह न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी प्रयोग की जा रही है। हमारे राजनेता कभी संयुक्त राष्ट्र संघ में तो कभी किसी विदेशी मंच पर हिंदी में भाषण देते हुए दिख जाते हैं। इतना ही नहीं विकसित देशों के कई विश्वविद्यालयों में भी हिंदी का अध्ययन किया जा रहा है। यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शुमार है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में हिंदी के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एक समय था जब तकनीक केवल अंग्रेजी भाषा तक ही सीमित थी। परन्तु अब समय बदल गया है। अब हम सोशल साईट जैसे कि व्हाट्सऐप, फेसबुक, ट्वीटर आदि जैसे इलेक्ट्रोनिक मीडिया में तकनीक के जरिए हिंदी का बेरोक-टोक इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने हिंन्दी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा सभी से अनुरोध किया कि आप अपने काम में और व्यवहार में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और देश के विकास में योगदान दें।

अंत में कार्यालय अध्यक्ष की अनुमति से सभा में उपस्थित सभी कार्मिकों का सुश्री सरोज कुमारी, अधीक्षक द्वारा धन्यवाद किया गया।

निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार प्राप्त लेख-2022

तकनीक का हमारे दैनिक जीवन पर सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव

श्री आशीष कुमार सिंह
अवर श्रेणी लिपिक

प्रस्तावना :-

जीवन के प्रारम्भ से ही मनुष्य ने अपनी जीवन पद्धति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार विकसित करना शुरू कर दिया था। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। इस पद्धति को अपनाकर हममें सोचने-समझने की क्षमता विकसित होती गई। आज के समय में तकनीक मानव जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई है। कहीं न कहीं, हमने तकनीक के ऊपर अपनी जीवनशैली को निर्भर कर दिया है।

तकनीक का महत्व :-

तकनीक का हमारे जीवन में बहुत अच्छा व बुरा दोनों प्रकार का महत्त्व है। यह हमारे जीवन में बहुत सी सहुलियत प्रदान करती है व कहीं न कहीं यह कई प्रकार की रूकावटें व बीमारियों का कारण भी बनती है। परन्तु आज का जीवन बिना तकनीक के असंभव सा लगता है।

तकनीक का विकास :-

किसी भी तकनीक का इस्तेमाल या आविष्कार मानव ने अपने दैनिक जीवन में पड़ने वाली जरूरत के हिसाब से किया है। जैसे–जैसे मानव की जरूरत व जिज्ञासा बढ़ती गई मानव का तकनीक में रूझान बढ़ने लगा। फिर इस प्रकार आज तकनीक मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग बन गई है।

तकनीक का उदेश्य:-

तकनीक का उदेश्य हमेशा से मानव ने अपने दैनिक जीवन को और अधिक सुविधाजनक बनाने के उदेश्य से किया है। कहीं न कहीं इसका प्रभाव देखने को भी मिलता है। परन्तु इस तकनीक के कारण काफी नुकसान भी मानव को देखना पड़ा है।

दैनिक जीवन में बढ़ती तकनीक के सकारात्मक प्रभाव:-

बढ़ती तकनीक के दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं।

(1) शिक्षा में क्षेत्र में:-

शिक्षा के क्षेत्र में आज दूरदराज गाँव में बैठा बच्चा भी शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम है। यह तकनीक के कारण ही सम्भव हो सकता है। वह इंटरनेट के माध्यम से उच्च स्तर की शिक्षा भी ग्रहण कर पाता है तथा अपनी अन्य प्रकार की क्षमताओं का भी विकास कर पाता है।

(2) स्वास्थ्य के क्षेत्र में:-

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी तकनीक का विस्तार काफी बढ़ा है। आजकल तकनीक के माध्यम से कृत्रिम अंग लगाए जा रहे हैं। दवाईयों के आविष्कार में तकनीक का बहुत महत्त्व है। बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज भी खोजा जा रहा है।

(3) विज्ञान के क्षेत्र में:-

आज विज्ञान के क्षेत्र में हम काफी आगे बढ़ रहे हैं। जहां हम मंगल ग्रह पर पहुंचने की ओर अग्रसर हैं, वहीं दूसरी तरफ हम चांद पर भी पहुँच गए हैं।

(4) मौसम के क्षेत्र में:-

मौसम की जानकारी हमें तकनीक के विकास के कारण काफी सटीकता से मालूम चल जाती है। इससे खेती एवं अन्य संबंधित कार्यों में सहुलियत प्राप्त होती हैं।

(5) खेती में:-

कृषि में तकनीक के कारण फसल उत्पादन में काफी विकास हुआ है। कृषि के क्षेत्र से संबंधित मशीनों का निर्माण, कम जमीन में अधिक अन्न उपजाने की तकनीक और सिंचाई व्यवस्था में सुधार देखने को मिलता है। कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन तकनीक के कारण देखने को मिलते हैं।

(6) यातायात एवं मनोरंजन के क्षेत्र में:-

यातायात एवं मनोरंजन के क्षेत्र में तकनीक की अलग पहचान है। आजकल हम किसी भी दूरी को तकनीक द्वारा बनाये गए साधन से कम समय में पूरी कर लेते हैं तथा सामान का आवागमन सुगम रूप से होता है। टी.वी. चैनलों का प्रसारण भी तकनीकी के माध्यम से किया जा रहा है। खिलौनों में तकनीक का इस्तेमाल उसे रोचक बनाता है।

बुलेट ट्रेन, हवाई जहाज, गाड़ियों की रफ्तार भी इसी कारण सम्भव हो पाती है। यातायात में आई तेजी व समय की बचत तकनीक के कारण ही संभव हो पाई है।

तकनीक का हमारे जीवन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव:-

तकनीक के हमारे जीवन पर बहुत से नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं।

(1) साइबर फ्रॉड में (साइबर क्राइम):-

प्रायः देखने को मिलता है कि तकनीक का प्रयोग आजकल हमारे जीवन में साइबर क्राइम के रूप में हो रहा है। लोगों की निजी जानकारी व बैंक में रखे पैसे तकनीक के माध्यम से चोरी कर लिए जाते हैं।

(2) मौसम में बदलाव (क्लाईमेट चेंज):-

कलाईमेट चेंज का एक प्रमुख कारण तकनीक ही है। बढ़ते तकनीक के कारण हानिकारक गैसों का उत्सर्जन बहुत अधिक होता है जिसके कारण काफी ग्लेशियर पिघल रहे हैं व मौसम में बदलाव हो रहा है।

(3) प्रदूषण में बढ़ोत्तरी:-

प्रदूषण में भी इसका एक महत्त्वपूर्ण रोल है। जैसे-जैसे तकनीक का निरन्तर गलत इस्तेमाल हो रहा है वैसे-वैसे जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण में बढ़ोत्तरी पाई गई है। जन-जीवन पर विपरित प्रभाव पड़ता है।

(4) युद्ध में तकनीक का दुष्प्रभाव:-

तकनीक की बढ़ोत्तरी से सभी देश काफी शक्तिशाली हथियारों का निर्माण करते हैं जिससे युद्ध होने के आसार बढ़ जाते हैं।

(5) अश्लीलता को बढ़ाना:-

आजकल देखने को मिलता है कि तकनीक भारत की सामाजिक स्थिति पर काफी बुरा प्रभाव डालती है तथा अश्लीलता भी इसका प्रमुख कारण है।

(6) बीमारी का कारण:-

बढ़ती तकनीक के कारण मानव के काफी क्रियाकलाप जैसे व्यायाम, बाहरी खेलों को खेलना आदि लगभग बंद हो गए हैं जिससे उन्हें कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तकनीक के विस्तार से हम अपने जीवन में काफी बदलाव महसूस करते हैं। यह भी देखने को मिलता है कि तकनीक के कारण व्यक्तियों में मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है। तकनीक को अगर सीमित व सही दिशा में प्रयोग किया जाए तो यह वरदान है और अगर वही इसे गलत दिशा में प्रयोग किया जाए तो यह अभिशाप की तरह साबित होगी।

राजभाषा पखवाड़ा वर्ष 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सूची

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक: 20.09.2022)

क्रं. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम सर्व श्री/श्रीमति/सुश्री	प्रतियोगिता में प्राप्त स्थान	प्राप्त नकद पुरस्कार राशि
1.	आशीष कुमार सिंह. अ.श्रे.लि.	प्रथम	रूपये 1800/–
2.	मुकेश कुमार, सहायक	द्वितीय	रूपये 1500/–
3.	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	तृतीय	रूपये 1200/–
4.	अमित आनंद, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–
5.	सपना रानी, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता (दिनांक: 21.09.2022)

1.	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रूपये 1800/–
2.	राजेश कुमार, अ.श्रे.लि.	द्वितीय	रूपये 1500/–
3.	अनिल कुमार, सहायक	तृतीय	रूपये 1200/–
4.	आशीष कुमार सिंह, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–
5.	प्रियांशु कुमार, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–

राजभाषा ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता (दिनांक: 22.09.2022)

1.	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रूपये 1800/–
2.	विकास कुमार, अ.श्रे.लि.	द्वितीय	रूपये 1500/–
3.	राजेश कुमार, प्र.श्रे.लि.	तृतीय	रूपये 1200/–
4.	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–
5.	प्रियांशु कुमार, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–

हिन्दी वाक प्रतियोगिता (दिनांक: 29.09.2022)

1.	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रूपये 1800/–
2.	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	द्वितीय	रूपये 1500/–
3.	सपना रानी, प्र.श्रे.लि.	तृतीय	रूपये 1200/–
4.	अनिल कुमार, सहायक.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–
5.	प्रियांशु कुमार, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रूपये 500/–

उपर्युक्त पुरस्कारों का कुल योग: 22000/–

उपर्युक्त के अतिरिक्त शाखा कार्यालय ग्यासपुरा, लुधियाना एवं प्रशासन शाखा को क्रमश: शाखा कार्यालयों एवं शाखाओं का सर्वश्रेष्ठ राजभाषा उत्कृष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त कार्मिक- वर्ष 2022

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम (सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	शाखा/कार्यालय
1.	राजेश कुमार	अ.श्रे.लि.	प्रेषण शाखा
2.	पप्पू कुमार	अ.श्रे.लि.	प्रेषण शाखा
3.	बलविन्द्र सिंह	अधीक्षक	विधि, वसूली शाखा
4.	सुनील मोची	प्र.श्रे.लि.	वसूली शाखा
5.	जसप्रीत सिंह	सहायक	वसूली शाखा
6.	रंजना गोस्वामी	शा. प्रबंधक	कोहड़ा
7.	सुखविंद्र सिंह	सहायक	कोहड़ा
8.	रजनीश कुमार	प्र.श्रे.लि.	कोहड़ा
9.	प्रिंस कुमार	अ.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
10.	सुखदीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
11.	अर्शदीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
12.	राम प्रवेश	सहायक	बड़ा नियोजक कक्ष
13.	रमनदीप सिंह	सहायक	हितलाभ शाखा
14.	सुजीत कुमार	सहायक	सामान्य/राजस्व–2 शाखा
15.	प्रियांशु कुमार	अ.श्रे.लि.	राजस्व शाखा–2
16.	रोहित जरोरा	आशुलिपिक	निजी कक्ष
17.	दीपक भाटिया	सहायक	समन्वय शाखा
18.	सुखविंदर कौर	प्र.श्रे.लि.	समन्वय शाखा
19.	करमजीत कौर	प्र.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
20.	अजय कुमार	सहायक	राजस्व–1 शाखा
21.	हरिन्द्र सिंह	प्र.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
22.	मंजु शर्मा	अधीक्षक	वसूली/राजस्व–2 शाखा
23.	मोहित कुमार	प्र.श्रे.लि.	राजस्व–2/वित एवं लेखा
24.	नीरज कुमार	सहायक	राजस्व–2/सामान्य शाखा
25.	शशि कुमार	प्र.श्रे.लि.	राजस्व–2
26.	सपना रानी	प्र.श्रे.लि.	राजस्व–2
27.	अनिल कुमार कथूरिया	शा. प्रबंधक	फोकल पॉइंट

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम (सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	शाखा/कार्यालय
28.	अनिल कुमार	सहायक	फोकल पॉइंट
20.	श्याम लाल	सहायक	फोकल पॉइंट
30.	दीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	फोकल पॉइंट
31.	जगरीत सिंह	प्र.श्रे.लि.	फोकल पॉइंट
32.	गणेश प्रसाद	प्र.श्रे.लि.	फोकल पॉइंट
33.	अमी लाल	शा. प्रबंधक	राहों रोड
34.	मनीष कुमार	प्र.श्रे.लि.	राहों रोड
35.	आशीष सिंगला	प्र.श्रे.लि.	राहों रोड
36.	आकांक्षा रहेजा	अधीक्षक	संगणक शाखा
37.	तरुण कुमार	प्र.श्रे.लि.	फोकल पॉइंट
38.	शमशेर सिंह	अधीक्षक	वित एवं लेखा शाखा
39.	अमनदीप कौर	प्र.श्रे.लि.	वित एवं लेखा शाखा
40.	अमनदीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	गिल रोड
41.	ऋषि सूद	सहायक	गिल रोड
42.	संतोख सिंह	प्र.श्रे.लि.	गिल रोड
43.	मुकेश कुमार	सहायक	प्रशासन शाखा
44.	ज्ञान गौरव कुमार	अ.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा
45.	हरेराम कुमार	अ.श्रे.लि.	फोकल पॉइंट
46.	अमित आनंद	अ.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
47.	प्रदीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
48.	सुरेन्द्र पूनिया	अधीक्षक	रोकड़ शाखा
49.	विश्वास	प्र.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
50.	मोहित कुमार धीमान	प्र.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
51.	आशीष कुमार सिंह	अ.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
52.	मंधीर सिंह	प्र.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
53.	शिवा कुमार	प्र.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
54.	दलजीत सिंह	सहायक	ग्यासपुरा
55.	अवतार सिंह	प्र.श्रे.लि.	ग्यासपुरा
56.	लवप्रीत सिंह	प्र.श्रे.लि.	बड़ा नियोजक कक्ष

हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं एवं हिन्दी प्रतियोगिताएं

निगम में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. सरकारी कामकाम में मूल हिन्दी-टिप्पण आलेखन-प्रोत्साहन योजना:-

यह योजना प्रत्येक वर्ष अप्रैल से अगले वर्ष मार्च तक की अवधि के लिए होती है। इस योजना के लिए पात्रता 'क' और 'ख' क्षेत्र में कम से कम 20,000 शब्द प्रतिवर्ष हिन्दी में लिखने होते हैं। इस योजना के अंतर्गत कुल 10 पुरस्कार दिए जाते हैं जो निम्नानुसार हैं :

1) प्रथम पुरस्कार (दो) 5000/- रुपये (प्रत्येक)
2) द्‌वितीय पुरस्कार (तीन) 3000/- रुपये (प्रत्येक)
3) तृतीय पुरस्कार (पांच) 2000/- रुपये (प्रत्येक)

2. हिन्दी डिक्टेशन पुरस्कार योजना:-

अधिकारियों के स्तर पर हिन्दी में डिक्टेशन के लिए यह योजना लागू की गई है। इसके अंतर्गत 5,000/- रुपये के दो पुरस्कार हिन्दी भाषी व हिंदीतर भाषी वर्ग के लिए निर्धारित किए गए हैं।

3. हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना :-

निगम कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के उद्‌देश्य से हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना लागू की गई है। यह योजना कैलेन्डर वर्ष के लिए अर्थात 1 जनवरी से 31 दिसंबर की अवधि के लिए होती है। इसके अंतर्गत 'ख' क्षेत्र में वर्ष के दौरान 75 प्रतिशत या इससे अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को 600/- रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

4. राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना-

निगम कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए एक सुझाव पुरस्कार योजना लागू है। इस योजना के अंतर्गत हर वर्ष (अप्रैल से अगले वर्ष मार्च तक) प्राप्त ऐसे सुझावों पर मुख्यालय, नई दिल्ली द्‌वारा पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देने की व्यवस्था है जिन्हें निगम के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से उपयोगी पाया गया हो। पुरस्कार राशि निम्नानुसार है–

कुल पुरस्कार राशि रुपये 12000/- (बारह हजार रुपये मात्र)

अधिकतम पुरस्कार राशि रुपये 3000/- (तीन हजार रुपये मात्र)

न्यूनतम पुरस्कार राशि :– रुपये 600/- (छः सौ रुपये मात्र)

5. हिन्दी प्रतियोगिताएं :

उपरोक्त के अलावा प्रत्येक वर्ष राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जैसे –हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण–आलेखन प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता एवं हिन्दी वाक् प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं में विजेता कार्मिकों को 1800/- रूपये का प्रथम पुरस्कार, 1500/- रुपये का द्‌वितीय पुरस्कार, 1200/- रुपये का तृतीय पुरस्कार तथा 500–500/- रुपये के दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

''हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना'' वर्ष 2021-22 के पुरस्कारों को प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सूची।

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	पदनाम	स्थान	राशि
1	श्री नीरज कुमार	सहायक	प्रथम	5000/-
2	श्री मोहित कुमार	प्र.श्रे.लि.	प्रथम	5000/-
3	श्री लवप्रीत सिंह	प्र.श्रे.लि.	द्वितीय	3000/-
4	सुश्री सपना रानी	प्र.श्रे.लि.	द्वितीय	3000/-
5	श्री मुकेश कुमार	सहायक	द्वितीय	3000/-
6	श्री अमनदीप सिंह	प्र.श्रे.लि.	तृतीय	2000/-
7	श्री जसप्रीत सिंह	सहायक	तृतीय	2000/-
8	श्री सुनील मोची	प्र.श्रे.लि.	तृतीय	2000/-
9	श्री दीपक भाटिया	सहायक	तृतीय	2000/-

वर्ष 2021-2022 की नराकास प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम

वर्ष 2021–22 के लिए राजभाषा में किए गए उत्कृष्ट कार्य हेतु केन्द्रीय कार्यालयों की श्रेणी में उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना द्वारा ''विशेष पुरस्कार' प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित संयुक्त हिन्दी प्रतियोगिता, वर्ष 2022 की ''हिन्दी चित्र कहानी'' प्रतियोगिता हेतु श्री मुकेश कुमार, सहायक को द्वितीय स्थान प्रदान किया गया। साथ ही उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में किए गए हिन्दी के उत्कृष्ट कार्य हेतु श्री राजू कुमार, सहायक को भी इस अवसर पर विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023—24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई—मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पणी	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई—पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर	100%	100%	100%

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे/सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30% (न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।	20%

जांच बिन्दुओं का अनुपालन

विषयः राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए स्थापित जांच बिन्दुओं का अनुपालन।

सरकार की राजभाषा नीति को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने जांच बिन्दु स्थापित किए हैं और इनके सम्यक अनुपालन पर जोर दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति जब किसी इकाई (कार्यालय/अस्पताल) का निरीक्षण करती है तो जांच बिन्दु के अनुपालन की समीक्षा करती है। इसलिए प्रत्येक कार्यालय अध्यक्ष का उत्तरदायित्व है कि यह स्थापित जांच बिन्दुओं का अनुपालन सुनिश्चित करे। प्रत्येक कार्यालय को प्रतिवर्ष अप्रैल माह में जांच बिन्दुओं की सूची जारी करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जांच बिन्दुओं की प्रति प्रत्येक अधिकारी को जारी की जाती है और इसकी एक प्रति नियंत्रणाधीन शाखा को भी भेजी जाती है। तत्पश्चात पूरे वर्ष प्रत्येक जांच बिन्दु के सम्यक अनुपालन की बारीकी से निगरानी रखी जाती है तथा अनुपालन का उल्लंघन पाए जाने पर उसे संबंधित इकाई के अध्यक्ष के ध्यान में लाया जाता है। विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भी इस मद पर चर्चा की जाती है और अनुपालन हेतु आवश्यक निर्णय लिए जाते हैं।

जांच बिन्दुओं की गई निम्नानुसार है:-

क्रं सं.	मद	उत्तरदायी
1.	राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज जैसे परिपत्र, आदेश आदि को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी करना।	हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी/सभी शाखाएं
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना।	हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी/सभी शाखाएं
3.	लिफ़ाफ़ों पर पते हिन्दी में लिखना।	सभी शाखाधिकारी/जारीकर्त्ता अधिकारी तथा प्राप्ति एवं प्रेषण शाखा के अधिकारी
4.	सभी पत्रशीर्ष द्विभाषी रूप में तैयार/प्रयोग करना।	सभी शाखाधिकारी/हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी
5.	रजिस्टरों एवं सेवा पुस्तिकाओं/सेवा अभिलेख के शीर्ष द्विभाषी होना तथा उनमें से प्रविष्टियाँ हिन्दी में करना।	प्रशासन शाखा के अधिकारी/लेखा अधिकारी
6.	रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, साइन बोर्ड आदि द्विभाषी बनाना।	सामान्य शाखा के अधिकारी/संबंधित शाखा अधिकारी
7.	'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों को भेजे जाने वाले पत्र आदि अनिवार्यतः हिन्दी में जारी करना।	हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी/संबंधित शाखा
8.	द्विभाषी कम्प्यूटरों/इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की खरीद/व्यवस्था	सामान्य शाखा के अधिकारी/खरीद शाखा

क्रं सं.	मद	उत्तरदायी
9.	हिन्दी में प्राप्त आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी भाषा में ही दिया जाना।	हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी/संबंधित शाखा
10.	सभी विभागीय बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करना तथा बैठक की कार्यवाहियाँ हिन्दी भाषा में संचालित करना।	बैठक अध्यक्ष/हस्ताक्षरकर्त्ता अधिकारी/संबंधित शाखा अधिकारी/शाखाएँ
11.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा हिन्दी में कार्य निष्पादन।	राजभाषा कार्यन्वयन समिति के अध्यक्ष, सदस्य सचिव तथा सभी सदस्य
12.	सभी कंम्प्युटरों में यूनिकोड सहित हिन्दी का उपयुक्त सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराना तथा ईमल हिन्दी में किया जाना।	प्रणाली शाखा के अधिकारी/तथा सभी ई–मेल जारीकर्त्ता अधिकारी/शाखाएँ
13.	इकाई (कार्यलय/अस्पताल) द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले मुद्रित/साइक्लोस्टाइल फॉर्म एवं मानक मसौदों को द्विभाषी रुप में ही मुद्रित तथा प्रकाशित करवाया जाना।	सामान्य शाखा के अधिकारी/संबंधित प्रयोगकर्त्ता अधिकारी/शाखा अधिकारी
14.	विज्ञापन पर खर्च की जाने वाली कुल राशि में से न्यूनतम 50% राशि का व्यय अनिवार्यतः हिन्दी विज्ञापनों पर किया जाना	जनसंपर्क शाखा अधिकारी
15.	वेबसाइट का द्विभाषीकरण तथा वेबसाइट पर सामग्री (पत्र–व्यवहार आदि) द्विभाषी रुप में ही अपलोड किया जाना।	वेबसाइट सामग्री प्रबंधक तथा पत्र आदि जारीकर्त्ता अधिकारी/शाखा अधिकारी
16.	अनुपालन के सबंध में प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व (राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के उपबंधों तथा केन्द्र सरकार द्वारा समय–समय जारी किए गए निर्देशों का समुचित रुप से अनुपालन सुनिश्चित करना/करवाना)।	इकाई (कार्यलय/अस्पताल) अध्यक्ष
17.	सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट शाखाओं में अनुपालन।	विनिर्दिष्ट शाखाओं के अधिकारी/विनिर्दिष्ट शाखाएँ
18.	उपस्थिति पंजिका में कार्मिकों के नाम तथा हस्ताक्षर हिन्दी में होगा।	सभी शाखा अधिकारी/सभी कार्मिक

लुधियाना की कुछ प्रसिद्ध हस्तियाँ

1

सुखदेव : (15 मई 1907 – 23 मार्च 1931) एक भारतीय क्रांतिकारी जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ाई लड़ी। वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य थे। उन्हें ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था और 23 मार्च 1931 को 23 साल की उम्र में अंग्रेजों ने उन्हें फांसी दे दी थी।

2

जगदीश चंद्र महिंद्रा: इनको आमतौर पर जे.सी. महिन्द्रा (सन् 1882–1951) कहा जाता है। ये एक भारतीय उद्योगपति और 1945 में कैलाश चंद्र महिंद्रा और मलिक गुलाम मोहम्मद के साथ महिंद्रा एंड महिंद्रा के सह–संस्थापक थे। वह महिन्द्रा समूह के वर्तमान अध्यक्ष आनंद महिन्द्रा के दादा है।

3

धर्म सिंह देओल: (जन्म 8 दिसंबर 1935), आमतौर से धर्मेंद्र के रुप में जाने जाते हैं। एक भारतीय अभिनेता, निर्माता और राजनीतिज्ञ हैं। हिंदी फिल्मों में अपने काम के लिए जाने जाते हैं और उन्होंने कुछ पंजाबी फिल्मों में भी काम किया है।

4

सुनील भारती मित्तल: (जन्म 23 अक्टूबर 1957) एक भारतीय अरबपति व्यवसायी और परोपकारी हैं। वह भारती एंटरप्राइजेज के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। इनके दूरसंचार, बीमा, रियल एस्टेट, शिक्षा, मॉल, आतिथ्य, कृषि और भोजन के अलावा अन्य क्षेत्रों में विविध कारोबार हैं।

5

साहिर लुधियानवी: (8 मार्च 1921–25 अक्टूबर 1980) जो अपने कलम नाम (तखल्लुस) साहिर लुधियानवी के नाम से लोकप्रिय हैं। एक भारतीय कवि और फिल्म गीतकार थे जिन्होंने मुख्य रूप से हिंदी के अलावा उर्दू में लिखा था। उन्हें 20वीं शताब्दी का भारत के सबसे महान और क्रांतिकारी फिल्म गीतकार और कवि माना जाता है।

6

दिव्या दत्ता: (जन्म 25 सितंबर 1977): एक भारतीय अभिनेत्री और मॉडल हैं। वह मलयालम और अंग्रेजी भाषा की फिल्मों के अलावा हिंदी और पंजाबी सिनेमा में अभिनय करती हैं। उन्हें एक राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, एक फिल्मफेयर पुरस्कार और 2 आईफा पुरस्कारों सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

7

राज खोसला:- (31 मई 1925–9 जून 1991) 1950 से 1980 के दशक तक हिंदी फिल्म उद्योग के शीर्ष निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक थे।

8

बलदेव राज चोपड़ा: (22 अप्रैल 1914–5 नवंबर 2008) (1) बॉलीवुड उद्योग और टेलीविजन सीरियल के एक प्रसिद्ध भारतीय निर्देशक और निर्माता थे। नया दौर (1957) साधना (1958), कानून (1961), गुमराह (1963), हमराज (1967), इंसाफ का तराजू (1980), निकाह (1982), आवाम (1987) जैसी हिंदी फिल्मों के निर्देशन के लिए जाने जाते है और 1988 में टीवी सीरियल महाभारत के निर्माता थे।

उन्हें वर्ष 1998 के लिए सिनेमा में भारत के सर्वोच्च पुरस्कार दादासाहेब फाल्के पुरस्कार और 2001 में भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

9

पंकज कपूर:- (जन्म 29 मई 1954) एक भारतीय अभिनेता हैं जिन्होंने हिंदी थिएटर, टेलीविजन और फिल्मों में काम किया है। उन्होंने कई टेलीविजन धारावाहिकों और फिल्मों में अभिनय किया हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया है, जिनमें एक फिल्मफेयर पुरस्कार और तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार शामिल हैं।

10

सहादत हसन मंटो: (11 मई 1912–18 जनवरी 1955) एक पाकिस्तानी नाटककार और लेखक थे जो लुधियाना में पैदा हुए थे। ब्रिटिश भारत और बाद में, 1947 में भारत के विभाजन के बाद, पाकिस्तान में लेखन का कार्य करते रहे।

11

सिमी ग्रेवाल: भारतीय प्रसि़द्ध फिल्म अभिनेत्री, निर्माता निर्देशक और टॉक शो मेजबान हैं। उन्होंने कई पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

12

जूही चावला: भारतीय प्रसिद्व फिल्म अभिनेत्री हैं। वे 1980 के दशक की भारतीय सिनेमा की प्रमुख अभिनेत्री थी।

13

अवतार गिल: उनका जन्म लुधियाना में 13 मई 1950 को हुआ। वे जाने माने फिल्म अभिनेता हैं।

14

अरुण बक्शी: वे हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध कलाकार हैं। उन्होंने प्रसिद्ध सीरियल महाभारत में भी अभिनय किया था।

राजभाषा शाखा

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कार्यकलापों की झलकियाँ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मना रहा पखवाड़ा

ईएसआई अस्पताल में किया गया ईएसआई पखवाड़े का आगाज

सवेरा न्यूज/विपन

लुधियाना, 24 फरवरी: कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से 24 फरवरी से 10 मार्च तक मनाए जा रहे ईएसआई पखवाड़े का ईएसआई मॉडल अस्पताल में शुभारंभ किया गया। इस मौके अस्पताल की मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा. भैरवी देशमुख, ईएसआई जोनल की मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा. जसबीर कौर, उप क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक प्रभारी सुनील कुमार यादव व ईएसआई मॉडल अस्पताल के उप निदेशक गिरीश कुमार केन विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान पंजाब सरकार की मुहिम के तहत जिला टीबी नियंत्रण अफसर डा. आशीष चावला ने टीबी के लिए ट्रूनेट टैस्टिंग की शुरुआत की। अस्पताल के वित्त अधिकारी विक्रांत गोसाईं ने आम जनता को ईएसआई स्कीम के तहत विभिन्न हितलाभों के बारे में जानकारी दी। मेडिकल सुपरिंटेंडेंट ने इंफेक्शन कंट्रोल मैनुअल जारी किया। इसके अलावा पंजाब सरकार की ओर से एक महीने तक चलने वाले ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया। स्टाफ के लिए बेसिक लाइफ सपोर्ट ट्रेनिंग व आंखों का जांच शिविर लगाया गया। इस दौरान सही खानपान व मोटे अनाज की अहमियत बताई गई।

प्रोग्राम में उपस्थित ईएसआई के अधिकारी।

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਨੇ ਲਗਾਇਆ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨਿਵਾਰਨ ਕੈਂਪ

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਵਲੋਂ ਲਗਾਏ ਗਏ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨਿਵਾਰਨ ਕੈਂਪ 'ਚ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਵਜੋਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਏ ਉਪ-ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਸੁਨੀਲ ਕੁਮਾਰ ਯਾਦਵ ਨਾਲ ਹੋਰ ਅਧਿਕਾਰੀ।

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਯੋਜਨਾ ਬਾਰੇ ਦਿੱਤੀ ਜਾਣਕਾਰੀ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मना रहा है विशेष सेवा पखवाड़ा

ई.एस.आई.सी. ने पॉलिसी धारकों के लिए सुविधा समागम का किया आयोजन

सवेरा न्यूज/प्रतीक

लुधियाना, 1 मार्च : कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) की ओर से मनाया जा रहे विशेष सेवा पखवाड़े के तहत बुधवार को विभाग के उप क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर व उप क्षेत्रीय कार्यालयों के अधीन आते पांच शाखा कार्यालयों में शिकायत निवारण शिविर (सुविधा समागम) का आयोजन किया गया। उप क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर में हुए आयोजन में उप-निदेशक (प्रभारी) सुनील कुमार यादव ने उपस्थित प्रतिभागियों को कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत विभिन्न हितलाभों की जानकारी दी तथा उनकी शिकायतों का मौके पर समाधान किया। इसके अतिरिक्त बीमाकृत व्यक्तियों और नियोक्ताओं से ईएसआई की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए सुझाव भी लिए। प्रतिभागियों की ओर से बीमित व्यक्तियों के व्यक्तिगत डाटा में सुधार हेतु आवेदन में आ रही समस्याओं, औषधालयों की संख्या में बढ़ोतरी तथा साथ ही [illegible] बीमित व्यक्तियों हेतु सुपर स्पेशलिटी ट्रीटमेंट की सुविधा हेतु भी सुझाव प्राप्त हुए। यादव ने बताया कि व्यक्तिगत डाटा में सुधार संबंधित आवेदनों के शीघ्र निपटान हेतु शाखा कार्यालयों को निर्देश दिए जा चुके हैं तथा चिकित्सा सुविधा में विस्तार हेतु क्षेत्रीय कार्यालय के माध्यम से राज्य सरकार से ईएसआई औषधालयों कि संख्या में बढ़ोतरी के लिए अनुरोध किया जाएगा। इस अवसर में [illegible] बीमित व्यक्तियों ने भाग लिया।

उपस्थिति को संबोधित करते सुनील कुमार यादव।

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कार्यकलापों की झलकियाँ

बुधवार को बैठक में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अधिकारी व अन्य • सौ. विभाग

ईएसआइ की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए दिए सुझाव

जासं, लुधियाना : कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइ) ने अपनी स्थापना की 71वीं वर्षगांठ पर बुधवार को उपक्षेत्रीय कार्यालय के परिसर व पांच शाखा कार्यालयों में शिकायत निवारण दिवस का आयोजन किया। उपक्षेत्रीय कार्यालय के परिसर में उपनिदेशक (प्रभारी) सुनील यादव ने प्रतिभागियों को हितलाभों की जानकारी दी। उनकी शिकायतों का मौके पर समाधान भी किया। प्रतिभागियों की ओर से बीमित व्यक्तियों के व्यक्तिगत डाटा में सुधार के लिए आवेदन में आ रही समस्याओं, औषधालयों की संख्या में बढ़ोतरी व सेवानिवृत्त बीमित व्यक्तियों के लिए सुपर स्पेशियलिटी ट्रीटमेंट की सुविधा के लिए भी सुझाव प्राप्त हुए।

समागम में हिमालय वूलेन मिल्स से महाप्रबंधक हरनेक सिंह, कोहिनूर स्पिनिंग मिल्स के एचआर नवीन तिवारी, नियोजक प्रतिनिधि दिनेश अरोड़ा व संदीप बहल सहित अन्य ने भाग लिया। अगला शिकायत निवारण दिवस (सुविधा समागम) नौ मार्च को आयोजित किया जाएगा।

कर्मचारी बीमा निगम ने लगाया सुविधा शिविर

जागरण संवाददाता, लुधियाना : कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपनी स्थापना की 71वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में दिनांक 24 फरवरी से 10 मार्च तक चल रहे विशेष सेवा पखवाड़े के दौरान आज उप क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर व उप क्षेत्रीय कार्यालयों के अधीनस्थ पांच शाखा कार्यालयों में दूसरे शिकायत निवारण दिवस (सुविधा शिविर) का आयोजन किया। उप क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर में हुए मुख्य कार्यक्रम में उप-निदेशक (प्रभारी) सुनील कुमार यादव ने उपस्थित प्रतिभागियों को कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत विभिन्न हितलाभों की जानकारी दी तथा उनकी शिकायतों का मौके पर समाधान किया। प्रतिभागियों द्वारा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा बीमित व्यक्तियों हेतु लगाए गए विशेष सुविधा समागम के दौरान कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते अधिकारी • जागरण

बीमित व्यक्तियों के व्यक्तिगत डाटा में सुधार हेतु आवेदन में आ रही समस्याओं, औषधालयों में इलाज हेतु आ रही कठिनाइयों के बारे में बताया गया। इस शिविर में रालसन इंडिया लिमिटेड से लखबीर सिंह, अश्विन मसीह ईस्टमेन इंपेक्स से, प्रमोद शर्मा लुधियाना बेवेरेजेस तथा अश्वनी कुमार ओसवाल वूलन मिल्स से उपस्थित हुए। इसके अलावा समर बहादुर, निगम की ओर से अजय सिंह उप-निदेशक और सतीन्द्र सिंह अधीक्षक भी उपस्थित थे।

इ.एस.आइ.सी. की ओर से कामगारों के आवासों वाले क्षेत्रों में चलाया जाएगा स्वच्छता अभियान

सवेरा न्यूज/प्रतीक

लुधियाना, 26 फरवरी: कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) की ओर से 10 मार्च तक विशेष सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। उप क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक सुनील कुमार यादव ने बताया कि पखवाड़े के तहत सोमवार (आज) को कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान हेतु कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के साथ संयुक्त सुविधा समागम तथा निधि आपके निकट 2.0 का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद कल मंगलवार को ई.एस.आई.सी. की ओर से कामगारों के आवासों वाले क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। 1 मार्च को शिकायत निवारण दिवस, 2 मार्च को बीमाकृत कामगारों व आश्रितों के लंबित बिलों व दावों का निपटान, 3 मार्च को विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर, 6 मार्च को मोटे अनाजों (मिलेट्स) पर विशेष बल देते हुए पोषण शिविरों का आयोजन, 07 मार्च को जागरूकता शिविर, 9 मार्च को जन स्वास्थ्य जागरूकता व जीवन रक्षा-बचाने हेतु बुनियादी जागरूकता शिक्षा शिविर व 10 मार्च को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ पखवाड़ा सम्पन्न होगा।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा बीमित व्यक्तियों हेतु लगाए विशेष सुविधा समागम

लुधियाना, 1 मार्च (चोपड़ा): कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने अपनी स्थापना की 71वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर चल रहे 15 दिवसीय विशेष सेवा पखवाड़े के दौरान उपक्षेत्रीय कार्यालय व अधीनस्थ 5 शाखा कार्यालयों में शिकायत निवारण दिवस (सुविधा समागम) का आयोजन किया।

इस मौके पर उप-निदेशक (प्रभारी) सुनील कुमार यादव ने उपस्थित प्रतिभागियों को कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत विभिन्न हितलाभों की जानकारी देते हुए उनकी शिकायतों का मौके पर समाधान किया और बीमाकृत व्यक्तियों व नियोक्ताओं ने ई.एस.आई. की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए सुझाव भी दिए गए।

प्रतिभागियों द्वारा बीमित व्यक्तियों के व्यक्तिगत डाटा में सुधार हेतु आवेदन में आ रही समस्याओं, औषधालयों की संख्या में बढ़ोतरी के साथ ही सेवानिवृत्त बीमित व्यक्तियों हेतु सुपर स्पेशलिटी ट्रीटमेंट की सुविधा हेतु भी सुझाव दिए गए। इस अवसर पर निगम की ओर से अजय सिंह (उप-निदेशक), सत्यपाल सिंह (सहायक निदेशक) और सतिंदर सिंह (अधीक्षक) आदि उपस्थित थे।

सुविधा समागम में आयोजकों व प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उप निदेशक सुनील कुमार यादव।

ई.पी.एफ.ओ. व ई.एस.आई.सी. की ओर से रॉल्सन इंडिया में जागरूकता कैंप का आयोजन

सवेरा न्यूज/प्रतीक

लुधियाना, 27 फरवरी: कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ई.पी.एफ.ओ.) व कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) की ओर से सोमवार को जी.टी. रोड स्थित रॉलसन इंडिया लिमिटेड में 'निधि आपके निकट' का आयोजन किया गया। इस दौरान ई.एस.आई.सी. से सहायक निदेशक अश्विनी सेठ, एसएसओ सतीश सलूजा, एसएसओ आकांक्षा रोहेला तथा उनकी टीम द्वारा मेडिकल कैंप का आयोजन भी किया गया। सेमिनार का मुख्य उद्देश्य भविष्य निधि योजनाओं के बारे में बताना और इन योजनाओं से होने वाले लाभों के प्रति सभी को जागरूक करना था। सेमिनार के दौरान प्रवर्तन अधिकारी पंकज चौधरी एवं पूजा कोहली ने ईपीएफओ द्वारा ऑनलाइन सेवाओं के लाभ, [illegible], केवाईसी अपडेशन, यूएएन जेनरेशन, ईपीएफ एंड विविध उपबंध अधिनियम के तहत कार्रवाई प्रावधानों के [illegible], नोमिनेशन फार्म भरना, ऑनलाइन दावा प्रस्तुत करना इत्यादि जानकारी उपलब्ध करवाई। सेमिनार में उपस्थित कामगारों की समस्याओं का निवारण तुरंत किया गया। इस मौके ई.पी.एफ.ओ. से प्रवर्तन अधिकारी अरविंद भाटी, कृष्ण कुमार, [illegible] संजीव कुमार, [illegible] व राजेश कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

कैंप के दौरान कामगारों को संबोधित करते अधिकारी।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के विशेष सेवा पखवाड़े में 650 कर्मियों के स्वास्थ्य की जांच

जागरण संवाददाता, लुधियाना : कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपनी स्थापना की 71वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 24 फरवरी से 10 मार्च तक विशेष सेवा पखवाड़े का आयोजन कर रहा है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने ईपीएफओ के साथ मिलकर सोमवार को संयुक्त लोक संपर्क, सुविधा समागम कार्यक्रम रालसन इंडिया लिमिटेड के परिसर में आयोजित किया। इस दौरान स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया, जिसमें करीब 650 कर्मचारियों के स्वास्थ्य की जांच की गई। लोक संपर्क कार्यक्रम में निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय से सहायक निदेशक अश्वनी कुमार सेठ ने कर्मचारी राज्य बीमा योजना के तहत विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और उपस्थित प्रतिभागियों के प्रश्नों और समस्याओं का भी समाधान किया। इस अवसर पर सामाजिक सुरक्षा अधिकारी सतीश सलूजा, आकांक्षा

शिविर के दौरान कर्मचारी जांच करवाते हुए • जागरण

रोहेला और कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की ओर से ईओ अरविंद भाटी, ईओ पूजा कोहली और कृष्ण कुमार उपस्थित थे। रालसन इंडिया लिमिटेड की प्रबंधन टीम ने गतिविधियों के आयोजन की प्रशंसा की और कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अधिकारियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर लुधियाना शहर में कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपने एक उप क्षेत्रीय कार्यालय, पांच शाखा कार्यालय, एक मॉडल अस्पताल और तेरह ईएसआइ औषधालयों के जरिये करीब 18 हजार 461 कारखानों व संस्थानों में कार्यरत करीब [illegible] लाख कर्मचारियों और उनके परिजनों को सेवाएं प्रदान करता है।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक की एक झलक

हिन्दी कार्यशाला

लेह-लद्दाख का साईकल टूर-शरण सिंह पुत्र श्री शमशेर सिंह (कार्यालय अधीक्षक)

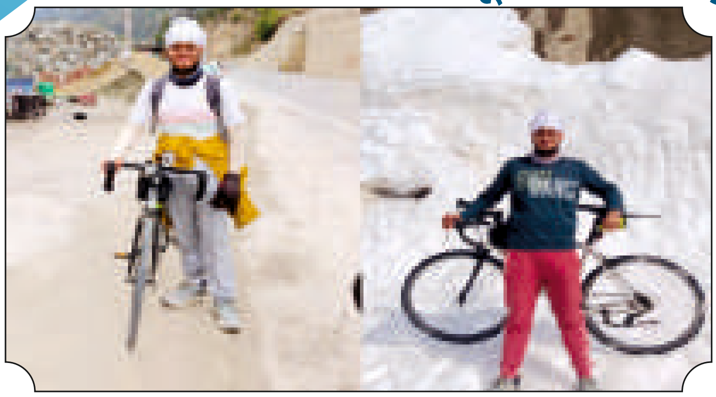

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियाँ

ई.एस.आई.सी. स्वच्छता पखवाड़ा-2022

नियोजकों के साथ सुविधा समागम की झलकियाँ

विशेष सेवा पखवाड़ा

स्वास्थ्य जांच शिविर

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना के परिसर में गणतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण

शीर्षक:- वटवृक्ष की हरित उम्मीद

स्केच आर्टिस्ट- अश्वनी कुमार सेठ, सहायक निदेशक

पेड़ बचाओ

पर्यावरण बचाओ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को हिंदी में किये गए उत्कृष्ट कार्य हेतु विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अधिकारियों से विशेष पुरस्कार संबंधी शील्ड ग्रहण करते हुए कार्यालय के सहायक निदेशक, श्री सत्यवान सिंह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को हिंदी में किये गए उत्कृष्ट कार्य हेतु विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अधिकारियों से विशेष पुरस्कार संबंधी प्रमाण–पत्र ग्रहण करते हुए कार्यालय के सहायक, श्री राजू कुमार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित चित्र–कहानी प्रतियोगिता के विजेता श्री मुकेश कुमार, सहायक–पुरस्कार ग्रहण करते हुए